गुणी की कहानी लक्ष्मीबाई की जुबानी

जुही जैन

अपनी नानी-दादी को हमने अक्सर कहते सुना है खांसी है तो अदरक की जड़ चूस लो। बाल-तोड़ में दर्दमार पत्ता गरम करके बांध लो। अकौए के फलों का चूर्ण हाजमा ठीक रखता है। नीम की निबौलियों का रस फोड़े-फुंसी का रामबाण इलाज है।

प्रकृति और हम

प्रकृति के साथ हमारा यह रिश्ता पुराने समय से चला आ रहा है। जड़ी-बूटियों से इलाज के अनगिनत किस्से हमारे शास्त्रों में दर्ज हैं। इसी संबंध को दर्शाती है एक प्रचलित बौद्ध लोक कथा। एक विहार में बौद्ध शिष्य चिकित्सा शास्त्र पढ़ रहे थे। परीक्षा का समय नज़दीक आया। गुरूजी ने कहा, 'जाओ और सात दिनों के अंदर ऐसी चीज ढूंढ कर लाओ जिसमें कोई औषधीय गुण न हो।' सभी शिष्य अलग-अलग दिशाओं में निकल पड़े। एक हफ्ते बाद सभी कुछ न कुछ लेकर लौटे। केवल एक शिष्य ब्रह्मदत्त खाली हाथ लौटा। पूछने पर बोला, 'गुरुवर, मुझे कोई भी ऐसी चीज नहीं मिली। प्रकृति तो गुणों की खान है।' यही शिष्य बाद में जाकर संसार का महान चिकित्सक बना।

ख्वाब से हकीकत तक

इसी लोक कथा को सच कर दिखाया राजस्थान के भिथोडी गांव के निवासियों ने। भिथोडी उदयपुर का बहुत गरीब और पिछड़ा इलाका है। यहां बसने वाले लोग आदिवासी हैं। जड़ी-बूटियों के इलाज में माहिर। कैसी भी तकलीफ हो, कानदर्द से लेकर हड्डी जोड़ने तक, इनके पास हर बीमारी का तोड़ है।

आप बीती

पहले पहल लोग हम पर शक करते थे। कहते थे हम टोना-टोटका करते हैं। काला जादू जानते हैं। पर अब वही कहते हैं, 'आओ बहन रोटी खा जाओ, तुम तो हमारे गांव की हो। हमें जल्दी मिल जाओगी। बाहर के डाक्टर का क्या भरोसा।' कहती हैं लक्ष्मीबाई।

लक्ष्मीबाई की उम्र पैंतालीस साल की है। वह बचपन से 'गुणी' का काम करती है। 'हमारे गांव में जड़ी-बूटी से इलाज करने वालों को गुणी कहते हैं। पहले यह काम सिर्फ मर्दों का था। हमारे गांव की औरतें मर्दों से इलाज नहीं कराती हैं। इसलिए उनका इलाज हो ही नहीं पाता था। गांव में मेरे जैसी काफी औरतें देसी इलाज जानती थीं। पर शुरुआत कौन करे? मैंने आठ साल की उम्र में यह काम सीखा। मेरी मां के कान में बहुत दर्द था। पिता ने कहा कि नहर के पास वाले झाड़ की पत्तियां तोड़ लाऊं। मैं पत्ती तो लाई पर

दूसरी। उससे इलाज तो हो गया मां का। साथ-साथ मोतियाबिंद में भी फायदा हुआ। बस तभी से यह काम करती हूं।

सरकार ने दवाखाना खोला

ससुराल आने पर यह काम छूट गया। फिर सरकारी दवाखाना भी खुल गया मेरे गांव में। शहर से डाक्टर आया। उसने अंग्रेज़ी इलाज किया। इलाज महंगा जरूर था, पर मरीज जल्दी ठीक होता था। इसलिए सब अपना देसी इलाज छोड़कर उसके पास जाने लगे। डाक्टर ने इस बात का फायदा उठाया। वह इलाज के पैसे मांगने लगा। पहले वह कार्ड बनाकर मुफ्त दवा देता था। उस पर बोतल में भरकर दवा देने वाले कम्पाउंडर की घूस अलग। हम क्या खाते और क्या इलाज करवाते।

एक नया जागरण

1989 में गांव में मलेरिया फैला। पंचायत ने सरकारी मदद मांगी। पर सरकार का रवैया लापरवाही का था। तीन दिन के अंदर आठ बच्चे मर गए। बस, हमने तय किया हम ऐसे नहीं मरेंगे। देसी दवा से इलाज करेंगे। कुछ तो फायदा होगा। हम सात लोग मिल गए। तीन मर्द, चार औरतें। और दिन-रात लोगों की सेवा की। मेहनत रंग लाई। चार दिन में चौदह सौ लोगों की हालत सुधरी।

इसके बाद हमने पीछे मुड़कर नहीं देखा। हमारा अपने ऊपर विश्वास बढ़ा। और 'जागरण' का जन्म हुआ। 'जागरण' की मदद से आस-पास के इलाकों में दवाखाने खोले। जहां दवाखाने नहीं थे वहां पैदल जाकर इलाज किया। 'गुणियों' ने सारदा, सलूंबेर, गिरवा ब्लाक में भी काम शुरू किया। आज की तारीख में 'जागरण' में सोलह 'गुणी' हैं। यह अपना गुणी का खजाना लेकर आस-पास के इलाकों में घूमते हैं। इलाज करने का हम कोई पैसा नहीं लेते। कोई जिद करे तो पैसे का दाना लेकर कबूतरों को खिला देते हैं। लोगों की दुआएं हमारी फीस है। हमारे खर्चे के लिए 'जागरण' हमें ढाई-सौ रुपए माहवार देता है।'

यह अंतिम पड़ाव नहीं है

लक्ष्मीबाई कहती हैं, 'पर समस्या पूरी तरह हल नहीं हुई है। आजकल जड़ी-बूटियां मिलने में काफी कठिनाई होती है। हमारे पास इलाज करने वाले लोगों की भी कमी है। इसलिए इस बार हमने पहली बार गांव में जड़ी-बूटी इलाज सिखाने का कैम्प लगाया। अब काफी औरतें 'गुणी' का काम सीख रही हैं।'

'जागरण' की मदद से लक्ष्मीबाई जैसी औरतें अपनी इस धरोहर को बचाने में सफल हो गई हैं। अब औरतें बिना इलाज के नहीं मरतीं। और वे महंगे अंग्रेज़ी इलाज की मोहताज भी नहीं हैं।

औरतों के जागरण का यह सपना तो सच हो गया है। यह कोई करिश्मा नहीं है। इसे देखा भी आप-हमने, इसे साकार भी किया हमने। पर सफर अभी खत्म नहीं हुआ है। अभी तो हमें बहुत कुछ पाना है। कुछ और सपने देखने हैं। कुछ और सपनों को पूरा करना है। तभी तो जी पाएंगे हम। तो आइए मिलकर कहें—

"हममें हिम्मत हममें मेहनत
हममें पूरा दम है
किसने कहा कि औरत जाति
मर्दों से कुछ कम है"

□